10. दादी जी के महावाक्य

हमें उन्नति की राह पर चलना है। जितनी हम अपनी उन्नति को प्राप्त करें, जितनी आध्यात्मिक शक्ति की ऊँचाई पर जायें उतना थोड़ा है। जितना हो सके अपने को निरहंकारी बनाना है। जितना हम निरहंकारी बनेंगे उतना सब बातों में सफल बनेंगे। अगर सब बातों में सफलता लानी है तो इगो को छोड़ना होगा।

जहाँ तक जीना है वहाँ तक सीखना ही सीखना है। बाबा की मुरली से हम रोज़ सीखते हैं।

भले कोई किसी भाव से हमें देखें लेकिन ज्ञान कहता है तुम सबका सत्कार करो। तिरस्कार क्यों करते हो? तुम जितना दूसरों को रिस्पेक्ट देंगे उतनी रिस्पेक्ट पायेंगे। योग सिखाता है तुम सबका सम्मान करो, रिस्पेक्ट दो। रिस्पेक्ट देने से ही लव मिलेगा। लव और रिस्पेक्ट ये दो पंख हैं जो सदा उड़ने का अनुभव कराते हैं।

जैसे आत्मा लाइट है ऐसे व्यवहार में भी लाइट रहो तो डबल लाइट हो जायेंगे। डबल लाइट माना ही एवर रेडी।

कई समझते हैं लाइफ में अकेलापन लगता है। अरे, आये अकेले, जाना अकेले तो ये अकेलापन कैसा? इतनी सारी विश्व की आत्माओं की स्टेज पर रहते हैं तो अकेले कैसा? स्टेज कितनी बड़ी है! यह दुनिया के ड्रामा का खेल देखो। अकेला क्यों?

इतनी बड़ी दुनिया की फिल्म चल रही है वह देखो। दूसरी बात अकेले रहने में तो बहुत मजा है। एकान्तप्रिय हो जाओ। कभी–कभी पहाड़ों पर जाते हैं तो लगता है यहाँ बड़ी शांति हैं शांति को तो सब प्यार करते हैं तो अकेले में ही तो शांति है। फिर अकेलापन क्यों फील होता है?

जो समझते हैं मैं अकेला हूँ शायद उनको शांति चाहिए ही नहीं। क्योंकि जहाँ भी दो होंगे वहाँ कुछ न कुछ चूँ–चूँ होगी। इसलिए अकेला ही तो प्रिय है।

जब आत्मा और परमात्मा दो हैं तो अकेले तो हुए ही नहीं। बाकी तो अपना परिवार है, दैवी परिवार है, सब एक–दूसरे के साथ हैं ही।

ओम् शांति।